ऋग्वेद

मु/१

पाण्डेय कपिल

□

संचालक-मंडल

पाण्डेय जगन्नाथ प्रसाद सिंह

पाण्डेय कपिल : पाण्डेय सुरेन्द्र : पी. चन्द्रविनोद

कृष्णानन्द कृष्ण : कन्हैया प्रसाद सिन्हा

□

प्रकाशक

भोजपुरी संस्थान; २, ईस्ट गार्डिनर रोड, पटना-८००००१ :: दूरभाष : २४१७५

□

दाम/एक अंक : एक रुपया/लगातार चार अंक : डाक खर्च समेत चार रुपया

□

मुद्रक

कर्म प्रेस, लोदीपुर पटना-१ :: दूरभाष : २४४५६

भिखारी ठाकुर ग्रंथावली

पहिल खण्ड

बिदेसिया, भाई बिरोध, बेटी बियोग, कलयुग प्रेम,
राधेश्याम बहार

दाम पन्द्रह रुपया

लोक कलाकार भिखारी ठाकुर आश्रम, कुतुबपुर, सारन

www.bhojpurisahityangan.com

उरेह

[भोजपुरी संस्थान, पटना के त्रैमासिक मुखपत्र]

वर्ष ५ : अंक १ □ जनवरी १९८०

रूप के हिरन/परमेश्वर दूबे शाहाबादी

किलकारी नदियन के
गोद में पहाड़ी के
थथमल बा रूप के हिरन।
गते गते उतरेला साँझ के ईंगोरी,
जनमतुआ पलना में चिरईं के लोरी।
गलबाहीं दे दे के
जंगल अलापेला—
थिरकेला मंथर पवन....!
नदिया तूफानी ना मानेले घेरा,
अल्हड़ जवानी प रूप के दरेरा,
मृगछौना मड़ई के
पंजरे में फुदुकता—
हो न जाय सीता हरन....।
महंगी के बहंगी प देह के सुखौता
बेकल जवानी प जीभ के सरौता
हाथ के तिजोरी में
दौलत पसीना के—
पेट में बा लंका दहन....।
बीन प सँपेरा के डोले ले नागिन
बाँस के पेटारी में किस्मत अभागिन,
संझा सिहर जाये
नाग के जहर पीके—
विकृत मन करे ला वमन—
थथमल बा रूप के हिरन। □

www.bhojpurisahityahgan.com

आजादी सेतै ना आइल/कैलाश गौतम

आजादी सेतै ना आइल हे साहेब।
कै कै तउँनी बली दियाइल हे साहेब॥
तू का जनवा ओ से पूछा जेकरे कुल में।
फिर फिर नाहीं गोद भराइल हे साहेब॥
उत्तर दक्खिन पुरुब पच्छिम चारो खूँटे।
सीधे सीधे कसम धराइल हे साहेब॥
झाँवर होय अँजोरिया जेकरे आगे ऊ।
हँसुआ ले रन में लहराइल हे साहेब॥
दुलहिन देह-दूब दधि दोनी दरपन द्वीप।
कोहवर मे हो माँग धोवाइल हे साहेब॥
छप छप ताल छपाछप छौना छउकल बेटा।
मानिक दियना इहैं हेराइल हे साहेब॥
पुरहर गरम भार कुलवंती भाग न पउली।
दुसमन के मन पाप समाइल हे साहेब॥
सावन कै पुनवासी बासी जइसे कच्ची फाँसी।
झाँसी अस जरई उधिराइल हे साहेब॥
जलियाँवाला बाग न भूलै आँखी देखल।
गिनले नाहीं लाश गिनाइल हे साहेब॥
आन्ही पानी धूर बवन्डर नदिया नारे।
जोगै जोगै के नाव खेवाइल हे साहेब॥
नंगी देह बरफ कै सिल्ली माघ-पूस में।
संगीन कोंच के कलम छिनाइल हे साहेब॥
पत्थर से बढ़ के बज्जर किसान कै छाती।
सोझै खड़ी फसल रौंदाइल हे साहेब॥
का का गाईं केतनी गाईं दरद होत हौ।
सवा सेर से सेर पराइल हे साहेब॥

□

www.bhojpurisahityangan.com

एक पाँती/कविता श्रीवास्तव

एक पांती
तोहरा खातिर छोड़ जाए के चाहतानी
जेमें तूँ जान सक
कि हम कबो
तोहरा के
मुट्ठियन के शाश्वत कारा में
बाँधे के ना चहनीं !
अइसे,
ई दोसर बात बा
कि तोहार फेनिल उल्लास
हमरा मुर्दनी के
बार-बार मुँह चिढ़ावत रहे !
तोहरा इन्तजारी में,
तोहरा खातिर
अँगुरिगन से मेटावल
बहुत नाम के कसम,
स्वर्णमृग के पीछे भाग के
इतिहास के पुनरावृत्ति
नइखीं करे के चाहत,
ना ग्रीक त्रासदियन के नायिकात्व के
लिप्सा बा हमरा में
बाकिर,
भरल-पुरल चाँद के पा लेवे के
तोहर हविस आ तोहार बेकलता,
तोहार हँस-हँस के रोअल,
हमार आपन गम भुला देता,
फेर.....
ई बात अचेतन में त बइठलहीं बा
कि शायद तोहार व्यामोह टूटे
आ
आसमान से तोहार नजर
धरती पर उतरे ! □

www.bhojpurisahityangan.com

गीत/हरेन्द्रदेव नारायन

काहे तूँ अइल ना, दुपहर के धूप ढल गइल

खर पात खरके त चिहुँक चिहुँक जात रहीं
देहरी पर खड़ा रहीं, आज कवन बात रहीं
अपना सपना के सोहरावत दिन बीत गइल
गाँव-गाँव घर घर में सँझवाती जल गइल

चम्पा कचनार जूही गेंदा फूले अंगना में
जब लोढ़ीं फूल तोहर प्यार बाजे कंगना में
अइसन निर्मोही बटोही तूँ अइल ना
तोहरे जोहत राह बहुत साल निकल गइल

ठनके नगिनिया जब घर के पिछुआरे
पी-पी पपीहा पुकारेला भिनसारे
गहिर नदिया के किनारा सब टूट जाला
अइसन बुझाला बँधल अँचरा खुल गइल

कहाँ गइल ज्ञान ध्यान जियरा अभिमान मोर
सपनाइला कि तूँ आइल बाड़ भोर-भोर
सपना से बनल बाटे जिनगी पिरीत विरह
समय संसर गइल सभे बात बदल गइल

□

www.bhojpurisahityangan.com

विशेष लेख

भोजपुरी काव्य में नई विधा/मोती बी. ए.

हम अक्सर देखीले कि साहित्यिको कहाये वाला लोग नई विधा की कविता से नाक-भौं सिकोरे लागेलें। ऊ लोग एकर आलोचने नाहीं, एके पढ़बो नाहीं करेलें। पढबो जो करेलें त कुछु समुझलें नाहीं। ए व्यवहार से नई विधा के कवनो हानि ना पहुंचेला। ई हमार देस एगो देसे ह। चाय के हमार देश एही तरें अपनवलसि। हमके ए बाति के बड़ी प्रसन्नता बा कि बहुत अल्प समय में भोजपुरी साहित्य के विभिन्न क्षेत्र भरल-पुरल लउके लागल। एकरी काव्य जगत में नई विधा के शुभागमन तात्कालिक अनिवार्य आवश्यकता रहल ह जवना के सामयिक पूर्ति 'ई हरनाकुस मन', 'जोत कुहासा के' आ 'बाकिर' क रहल बाड़ी सनि।

नई कविता माने कि नई विधा के कविता—विचार में बारूद भा डाइनामाइट नीयर वर्क करेले। पाण्डेय सुरेन्द्र 'ई हरनाकुस मन' की भूमिका में लीखत बाने कि "..... ई कविता-गद्य एगो तनाव-भरल बा। ईहे तनाव ओकरा के कविता के रूप दे रहल बा।" ईहे बाति शारदानन्द जी की 'बाकिर' की प्रस्तावना में अउर साफ हो गइल बाटे— "तनाव जवन कविता के रूप ध लेत बा ऊहे 'मोचावट के धागा में बाकि के गाँठ' बनि जाता।" 'जोत कुहासा के' के कविता एह कुल्हि प्रभावन क लेके आँधी-तूफान-बवण्डर के रूप ध लेति बा। ई तीनो काव्य पुस्तक मिलि क एगो एइसन नवीन वातारण के सृष्टि क रहल बाड़ी सनि जवना में बड़ा गहिर आक्सीजन बाटे। पाण्डेय सुरेन्द्र के तनाव, शारदानन्द जी के बाकिर के गाँठ आ ब्रजकिशोर जी के आक्रोश जवने कारण से बा ऊहे कुल्हि कारण कविता के विषयवस्तु ह। ए विषय वस्तु से जवनी तरह के लगाव होई ओही तरह के ओकर अभिव्यक्ति होइहें सनि। दिनकरोजी की कविता के त ईहे विषय वस्तु रहली सनि। जेतने सच्चाई आ गहराई से एकर अनु-

www.bhojpurisahityangan.com

भूति होई ओतने प्रभावोत्पादक एकर अभिव्यक्ति होई चाहे कलम कवनो होवो। व्यक्तिगत लगाव एह में सोना में सोहागा के काम करे लागेला। ए दृष्टि से देखला पर पाण्डेय सुरेन्द्र, शारदानन्द जी आ ब्रजकिशोर जी के आइडेण्टीटी स्पष्ट हो जाई। 'ई हरनाकुस मन' में ओज आ सौष्ठव, 'बाकिर' में ग्रंथि आ उद्वेग, 'जोत कुहासा के' में तड़पन, संवेग आ उत्साह बा। काव्य-कौशल में ई तीनों पुस्तक पूर्ण सफल बाड़ी सनि। रुचि-भिन्नता के कारण ई परस्पर एक-दूसरे से पृथक बाड़ी सनि जवन होखही के चाहीं।

जुग-जमाना की सही तस्वीर ओरेहला में आ विकासशील तत्वन के अनवला में 'ई हरनाकुस मन' के कुल्ही कविता आपन पुरहर शक्ति लगवले बाड़ी सनि। ए संग्रह के कवनो कविता संवेग प्रधान नइखी सनि। सगरो विचारोत्तेजक बाड़ी सनि। पाण्डेय सुरेन्द्र के कलम कागज के, माटी या पत्थर या कवनो किसिम के धातु समुझि के ओकरी ऊपर अभिलेख उत्कीर्ण कइले बा। उड़नछू भावना के कवनो गुंजाइश ए संग्रह में नइखे। विचारोत्तेजक कविता समाधानो प्रस्तुत करेले आ संशयावस्थो में छोड़ि देले। 'ई हरनाकुस मन' के कविता ए तथ्य से फरक नइखी सनि।

हम ऊपर जवन लिखली हं कि तनाव जवन कविता के रूप ध लेत बा ऊहे 'सोचावट के धागा में बाकिर के गाँठ बनि जाता। ई बात 'बाकिर आ 'ई हरनाकुस मन' के तुलनात्मक विवेचन से स्पष्ट हो जाई। सोचावट के धागा में बाकिर के गाँठ पाण्डेय सुरेन्द्र के 'ई हरनाकुस मन' के कई गो कविता में साफे देखात बाड़ी सनि, जइसे—

"भोर से साँझ तक / चलत चलत बीत जाला / बाकिर....." ई बाकिर 'जोन्हीं के छाया खोजला' में 'पुरइन के पात पर दरद पोंछला' में, 'आँवा अइसन तलफल भंगुरी रेत छान्हीं तर तोपला' में सोचावट की धागा में गाँठ बनि के अभुरा गइल बाड़े सनि। सीसा जोड़ जोड़ के जिनिगी के महल बनावे वाला अपनी ओही महल पर जब ढेला फेंकी त बाकिर लागिये जाई। पाण्डेय सुरेन्द्र के तनाव आ शारदा-

www.bhojpurisahityangan.com

नन्द जी के सोचावट की धागा में बाकिर के गाँठ तनी-मनी अन्तर के साथ एके अर्थ दे रहल बाड़े सनि ! हँ ओ लोगन की अभिव्यक्ति की शैली में आपन-आपन व्यक्तित्व अपनी-अपनी थइली की पइसा नियर अलगे से चिन्हा जात बा ! कई मोकाम पर हम देखत बानीं कि एकके थुन्ही ध के ई दूनू जाना अपनी अपनी ढंग से खूब हुमचत बा लोग ! उदाहरण खातिर हरना के दउरल आ समय के दौर (काल-चक्र) के लेके देखीं सभे पाण्डेय सुरेन्द्र आ शारदानन्द जी कवन कवन क्रिया (खेला) देखावत बाड़े—

बेरा के पतई अस / चित्ती चित्ती फाट के / फड़फड़ा रहल बा / समय / भीतर / फेंफड़ा में / जमल जा रहल बा / अइसन तहलका / जेसे / बिसवास के हवा में / सांस ना खिचा सके। (ई हरनाकुस मन)।

कालचक्र के ई अनुभव सामान्य सत्य के एगो अनूठा बिम्ब के रचना प्रस्तुत करता। ए बिम्ब के पाठक जेतने निहरिहें ओतने करीब ई आवत जाई आ एही क्रम से ओकरी साथ पाठक के तादात्म्य हो जाई। पाठक में आ ए कविता में कवनो अन्तर ना रही। एइसने एगो स्थल 'बाकिर' में पढ़े के सौभाग्य मिलल कि—

आदिमी / समय का बेआर छोर डोरी में / अभुराइल बा / जवना के फाँस पर फाँस / कसत जात बा / का / डोरी के मोह / ओके / काटे से बरजि रहल बा। (बाकिर)।

अनन्त कालचक्र में अभुराइल सृष्टि स्वयंसिद्ध ह। फाँस अनुभूति ह। बाकिर डोरी काटला के व्यामोह त आत्महत्या के संकेत दे रहल बा। ई बाति केहू का नीमन ना लागी। हत्यारा जवन फाँसी पर चढ़ावल जाला ऊहो मूवल नाहीं चाहेला। शारदानन्द जी जिनिगी से उबिया के ई का कहत बानीं एके बूझे के परी तब माने कें स्थिति उत्पन्न होई।

www.bhojpurisahityangan.com

एही तरे हिरन के दउरला के एगो विम्ब शारदानन्द जी प्रस्तुत कइले बानीं जवना के पूर्वार्द्ध में दार्शनिक आ उत्तरार्द्ध में बनिया के स्वरूप उरेहले बानीं। पढ़ीं ई कविता—

टिसुना में भरमाइल / दउड़त चलल / हरना के मन / गोड़ में / लाग गइल केड़ा / समय के रेत पर / पानी के छलछलात धार / ना मिलल !

(ई पूर्वार्द्ध ह कविता के जवना में जीवन-दर्शन झलकत बा। ए तथ्य के अनुभव से जीवन रस परिपाक बनेला। ई सामान्य सत्य ह। ए तथ्य से घटा के देखीं ए कविता के उत्तरार्द्ध—)

बाकिर / कँकड़ी के खेत में बसल / चोरवा का मन के / मोह ना छूटल !

(त हमार कहनाम ह कि हिरना के मन आ चोरवा के मन काहें रउरा एके बूझत बानी। हिरना हिरना ह, चोर चोर ह। एने दार्शनिको बनबि रउरा आ ओने चोरो बनबि। दूनू विलोम काम एके साथें रउरा से होई ! सोचावट की धागा में बाकिर के एइसन गाँठ मति जोरीं !)

'ई हरनाकुस मन' में पाण्डेय सुरेन्द्र जी लीखत बानीं कि—

चलत चलत / दुखा गइल पाँव / मिलत नइखे / कतह कवनो ठाँव / बालू वा चारू ओरी / ढेरी के ढेरी / परल बा अथाह में परान / जइसे कवनो धारा / मरुथल में / भटकत होखे / झहरत होखे / तूफान पर तूफान।

× × ×

मृग मरीचिके खाली लउकेला / दूर-दूर।

× × ×

एमे बहेंगवा मन / कहवाँ से फरियाद करो / खूँटा में मोर टाल बा।

www.bhojpurisahityangan.com

ए बिम्ब में तथ्य जवन उभारल गइल बा तवन जिन्दगी के आत्मसात क लेले बा। मन एमे रमि जात बा। बार-बार एके पढ़े के गावे के मन करत बा।

नई विधा एगो शैली ह अभिव्यक्ति के आ सम्प्रेषणीयता के। छान-पगहा (छन्द-तुक) के ना रहले से आगे चले के लमहर चाकर विस्तार लउकेला। नई विधा के हीरो लोग जब ए प्रशस्त भाव-विचार भूमि पर गन्धर्व-किन्नर के मेकअप में मुद्रा भांजे लागेलें, स्वांग देखावे लागेलें त बड़ा ग्लानि होला। ऊ लोग खामखाह भावुक विचारक आ क्रान्तिकारी बने लागेला। बिना अनुभूति आ सच्चाई के कवन तथ्य अभिव्यक्त या सम्प्रेषित होई! एहू विधा में ऊहे कुलि मसाला लागेला जवन छन्दबद्ध काव्य में होला। नई विधा में एकर प्रयोग आधारिक ना होके वास्तविक हो जाला एमे स्थायी भाव-विचार बिना नई विधा एकदम हल्लुक बुझाये लागेले। जीवन के स्थिर तथ्य नई विधा की कविता की प्रत्येक पाँती की भीतर से सोना नीयर दग दग झलकेले सनि जवना के देखते लोग ओकरी लगे दउरि के पहुँचे लागेला। नई विधा फैशन खातिर नाहीं, समय की माँग पर कवनो मिशन लेके आइल बा। उपेक्षा कइला से ई उपेक्षित ना हो जाई। दुख के बाति हहे बा कि लोग साहित्यिक बनला की अगुवाई में बिना जानल-बूझल हउहा के एह में ढहि परत बाड़े! अपने त हल्लुक होइए जात बाड़ें, एहू के हल्लुक बना डारत बाड़ें। 'ई हरनाकुस मन' के कवनो कविता ए दृष्टि से कमजोर नइखे! बालुक हम त इहाँ ले कहबि कि कवनो सुन्दर मार्मिक गीत नीयर एकरी हर एक कविता के बार-बार पढ़े के आ पढ़त रहे के अभिलाषा हरदम सजग भइल रहता। तूँ हँसेलू त फूल खिलेला, सवालन के जाल में फँसल कहाँ जाईं, एगो बलि अउरी दिहलीं देवता रच्छा कर, एह रोशनी के बाद के अन्हार बड़ा असह बा, आँख में भरा गइल सउँसे आसमान, हम पंछी जहाज के, झूठ मत बोल, भोर से साँझ तक—वास्तव में बहुत उत्कृष्ट रचना बाड़ी सनि। एह में तड़क-भड़क, मरिचा-नून-लहसुन त ना मीली जवना बिना व्यंजन त नी फीका

www.bhojpurisahityangan.com

बुझाला बाकी अँवरा भा आदी के चटनी जरूरे बा। ताजगी आ नयापन के नाँव पर गढ़ुआ भा कृत्रिम विम्ब एह में खोजलहूँ ना मीली। मूर्तिकार के शिल्प ईमानदार रचनाधर्मिता के प्रभाव से 'ई हरनाकुस मन' मे सजीव आ सशक्त विम्बन के बारात उतारि देले बा!

'ई हरनाकुस मन' के मूल्यांकन 'बाकिर' की साथे ना कइल जा सकेला। एही तरे 'बाकिर' के मूल्यांकन 'जोत कुहासा के' की संगे ना हो सकेला। तीनो एक दूसरा से अप्रभावित अपनी-अपनी आन-बान में स्वतंत्र रूप से दमकत बाड़ें सँ। 'ई हरनाकुस मन, 'बाकिर' में हमरा मुखर बुझाता आ 'बाकिर' 'जोत कुहासा के' में हमके सड़क पर, गली-गली, रस्ता-चौरस्ता पर मुट्ठी कसले, नारा लगावत विद्रोह-बगावत करत लउकत बा। एकरी उपरान्त 'बाकिर' के विम्ब-विधान रचनाकार के मानसिक संवेग के अनुसार तथ्य के तत्काल उभारि के सन्मुख प्रस्तुत क देत बा, जइसे—जिनिगी / एके बेर / घनकतो नइखे! ओइसहीं सुनगत बा जइसे / बीड़ी के दोकान में / रसरी जरेला!

बीड़ी के दोकान में जरत रसरी नीयर जिनिगी हमनी की घुटन के बड़ा जोरदार आ सही ढंग से हू ब हू उतारि देले बा। मन करे लागत बा कि ए रसरिया के लेके कतों आड़े भागि जाईं आ एही से अपनी घुटन के दर्द के सेंकीं! एहींगनि 'बाकिर' के उन्नीसवीं कविता देखीं—

मोरी में अंउधल पोस्टर / रस्ता में छितराइल घोषणा पत्र / मुँह विजुका के ताकत बा / जबानी भुगतान के जोर पर / चिचियात बा भोंपू / आ चौमुहानी छोड़िके भाग रहल बा लोग!

ए कविता में अपनी देश की दुर्दशा के स्पष्ट यथार्थ वर्तमानता हृदय से आके चिपकि जात बा। भाव-विचार के सम्प्रेषण में शारदानन्द जी के कमाल हासिल बा। कवनो किसिम के बात होखो, कवि

www.bhojpurisahityangan.com

अपनी कविता के कारखाना में झट से ओकर मसाला तइयार क क सप्लाई करे लागत बा। डाक्टर विश्वनाथ प्रसाद, हिन्दी विभाग, उदय प्रताप कालेज, वाराणसी एगो कविता-पुस्तक की भूमिका में लिखले बाड़ें कि 'चाहे प्रयोगवाद होखे या नई कविता, बिम्ब विधान होखे या सपाट बयानी—सवाल हर जगह सम्प्रेषणीयता के बाटे।' जो ई बाति सोरहो आना साँच होखे त शारदानन्द जी के बाकिर के कविता एमें पूर्ण सफल बाड़ी सनि! सम्प्रेषण में आम-इमिली, साँप-गोजर, हाड़ा-बिच्छी जवने मिल जा ओसे हमनी का खुश होखे के चाहीं। एही तरे नू अठाइसवीं कविता में 'हरना के मन' 'चोरवा के मन' हो गइल बा आ छब्बीसवीं कविता में डोरी के मोह ओके काटे से बरजि रहल बा याने कि आत्म हत्या से रोकि रहल बा भा 'विहंसति बा त विहंसे द' में निश्छल प्रेम-गंध में कइसे छितराई काहे कि विहंसल व्यंग्य मिश्रित हँसी होला। एसे निश्छल प्रेम कइसे व्यक्त होई। एइसने हँसी से नू मन के तिताई उभरेले आ गाभी के जहर उतरेले! जो सम्प्रेषण ले बाति रहिति त कुछुओ कहाइत, मजूरे रहल ह। बाकिर प्रश्न ईहो ओहींगा सजग बा कि कवन चीजु सम्प्रेषित हो रहल बा! सम्प्रेषणीयता की संगे उद्देश्य आ विधेय के ध्यान राखल अनिवार्य हो जाला! 'बाकिर' में ई सन्दर्भ देखल बहुत जरूरी बा।

'ई हरनाकुस मन' में ई प्रसग उठावले ना जा सकेला काहें कि बाति हाली हाली दूसरा तक पहुँचवला की पहिले अपनिए लगे ढेर देर ले रहि जाति बा। तब इतमीनान से सम्प्रेषण की हवाई जहाज से दोसरा की लगे ऊ पहुँचति बा। जहाँ जाति बा ऊहो बूझि जाति बाँड़ें कि केहू आइल बा। सम्प्रेषणीयता के ढेर महत्व दिहला से ई नोकसान बा कि अभिव्यक्ति भीतर से कमजोर होखे लागी, अनुभूति से कटि जाई, आकारिकता के चामक-चुमक असलियत के दबा देई आ अभिव्यक्ति ऊपर से दमदार भीतर से जर्जर हो जाई, जवनी तरे हिप्पी कट बार आ बेल बाटम के लहँगा युवा-वर्ग के सम्पदा-विहीन क के ध देले बा। ई कुल्हि एही सम्प्रेषणीयता के चमत्कार ह।

www.bhojpurisahityangan.com

सम्प्रेषणीयता की नाँव पर गढ़ई पर ना चढि के बइठे के चाहीं। ऊहे सम्प्रेषित होखो जवन सम्प्रेषण के योग्य होखे !

'एह धरती पर क वा / जे प्यार के भुखाइल नइखे' बाकिर के पहिली कविता ह जवना में अपनी वर्तमान जिनिगी के मार्मिक यथार्थ बहुत भींजल दर्द की शैली में व्यक्त भइल बा। एकें पढ़ते सँचहूँ अपनी असमर्थता आ निरर्थकता के कचोट पर कचोट हृदय में टीसे लागत बा। एह पार से ओह पार खाली ओठ हिलला के ढोंग आ जा रहल बा। पारदर्शक शीशा के देवाल खाली बिम्बे प्रस्तुत क सकेला, कवनो सम्वाद सम्प्रेषित ना क सकेला। एही तरे कान्ह पर के काँवर, ए हिरामन, इन्द्र का हाथ वगैरह कविता अँइठउवा रसरी नीयर बराइल बाड़ी सनि। बर्रे की दाना नीयर बतीसी जवन कविता बा पढ़ते जीउ गनगनाए लागत बा। बीभत्स के एतना सुन्दर सजीव बिम्ब में उतारल गइल बा कि रस के समुद्र विष के समुद्र बनि के घुमड़े लागत बा। एही भाव से आजुकाल सेक्सानन्द रेक्सा चला रहल बाँड़ें। ई कविता जवनी तेवर में लिखाइल बा ऊ तेवर अभिनन्दनीय बा। धूमिल'जी या वात्स्यायन जी वगैरह क कुछ लाँगट कविता सँचहूँ हल्लुक परि जात बाड़ी सनि, काहे कि 'बाकिर' क कवि-व्यक्तित्व अपनी ए कविता की सृष्टि से ब्रह्म नियर अलगे बा। 'घीउ से आँवासल सेनुर से टीकल कलसी ओही हाथे घवोरा गइल वाली कविता में परम्परा, संस्कृति, आधुनिक युग-बोध, आदि-अन्त, ऐतिहासिकता आँखी का सामने एक ब एक मूर्त हो उठत बा। 'मुस्कियात मुस्कियात मुँह दुखा गइल काहे कि ई कुकुरमुत्ता हँसी काठ स जनमल रहे' के व्यञ्जना, लाक्षणिकता आ तेवर के मिश्रित प्रभाव विलक्षण आ चमत्कारपूर्ण बा। पुल पार क के पुल उड़ा दिहला के मजा आजु दुनिया ले रहल बा। शारदानन्दजी क 'बाकिर' आ पाण्डेय सुरेन्द्र के 'ई हरनाकुस मन' अपनी-अपनी रंग म भोजपुरी साहित्य क अलौकिक रतन बाँड़ सनि। वास्तविक कविता के आनन्द ए दूनू काव्य पुस्तकनि में भरल बा। ई दूनू कृति अभिनन्दनीय आ संग्रहणीय बाड़ी सनि।

□

www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरी वेद (६)/

आचार्य डा० विश्वनाथ प्रसाद वर्मा

(४७) सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् ।
स भूमिं विश्वतो वृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ।
(ऋ० १०/९०/१)

सबसे बड़का सृष्टिकर्त्ता पुरुष महाराज का एक हजार मस्तक बा, एक हजार आँख आ एक हजार गोड़ । जब समस्त भूमि के उहां का घेर लिहिले तब भी दश अंगुर स्थान उहां का अधिके रहीले । अर्थात् पुरुष बड़का भारी ज्ञानी हईं ओ बड़ा विशालतम बानी । कवनो प्राकृतिक वस्तु से उनकर बड़प्पन सीमित ना कइल जा सके ।

(४८) पुरुष एवेदं सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम् ।
उतामृतत्वस्येशानो यत्नेनातिरोहति ।
(ऋ० १०/९०/२)

जे कुछ आज तक भइल बा ओ जे कुछ अनन्तकाल तक भविष्य में होई ऊ सब पुरुष महाराज ही बानी । उहां में मरण के सवाले नइखे, अमरता के भी उहां का अधीश्वर हईं । अन्न से उहाँ के बड़प्पन आउर सम्वर्धित हो जाला, अर्थात् प्राणिगण के कर्मफल भोगावे वास्ते कार्यरूप जगत् के उहां का विरचन करीले ।

(४९) एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पूरुषः ।
पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि ।
(ऋ० १०/९०/३)

उहां के महिमा परम प्रकृष्ट बाटे, किन्तु अपना महिमा से भी पुरुष महाराज श्रेष्ठतर बानीं । समस्त संसार के प्राणीं उनका एक चउथइए में बा । तीन चौथाई त अमर अनन्त प्रकाशमान लोक में बा । अर्थात् देशकाल से परे भी ईश्वर केसत्ता बा । ब्रह्माण्ड के देख के ना समझे के चाहीं कि ईश्वर मात्र ब्रह्माण्डव्यापी बाड़न । ऊ ब्रह्माण्ड से अत्यंन्त बड़ बाड़न ।

www.bhojpurisahityangan.com

(५०) त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत्पुनः।
ततो विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशने अभि।

(ऋ० १०/९०/४)

पुरुष आपन तीन चौथाई लेके ऊपर चल गइलन, उनकर एक चौथाईए फेर इहां रहल। ऊ चारो तरफ दौड़त रहलन, जे कुछ भोजन करेवाला अर्थात् चेतन, ओ जे भोजन ना करेवाला अर्थात् अचेतन बा, सबका ऊपर चललन अर्थात् जड़चेतन सब पर उनकर महिमा विदित बा।

(५१) तस्माद्विराडजायत विराजो अधि पूरुषः।
स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः।

(ऋ० १०/९०/५)

सहस्रशीर्षा पुरुष महाराज से विराट् उत्पन्न भइल। पुनः विराट् से पुरुष भइलन। अर्थात सहस्रशीर्षा पुरुष से विश्वाण्ड प्रकट भइल ओ आदि पुरुष पुनः ओह विश्वाण्ड में सृष्टिबीज प्रकट कइलन। जन्मला पर, भूमि पर पूरब ओ पश्चिम विस्तृत हो गइलन। सायण का अनुसार जब विराट् से पुरुष भइलन ई बात कहल जात बा तब ओकर तात्पर्य भइल जीवात्म पुरुष विराट् से उत्पन्न भइल।

(५२) यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत
वसन्तो अस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः।

(ऋ० १०/९०/६)

जब अनेक देवगण आदि पुरुष रूपी हविः अर्थात् यज्ञसामग्री से यज्ञ के तैयार कइलन तब वसन्तऋतु आज्य (चर्बी) का रूप में रहे, गर्मी के ऋतु लकड़ी रहे ओ शरद ऋतु हवि भइल। अर्थात् तीनो ऋतु के ऋषिगण, यज्ञ का सामग्री के रूप में उपमित कइले बाड़न।

(५३) तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन्पुरुषं जातमग्रतः।
तेन देवा अयजन्त साध्या ऋषयश्च ये।

(ऋ० १०/९०/७)

www.bhojpurisahityangan.com

प्राचीन काल में वर्तमान(—उत्पन्न) पुरुष के देवगण यज्ञ का वास्ते घास पर रखलन ओ शीतल कइलन। ओही पुरुष रूप, यज्ञपशु से देवगण, साध्य आउर ऋषि लोग यज्ञ कइलस। सायण का अनुसार ई सब यज्ञ मानसिक कल्पित कइल बा।

(५४) तस्माद्यज्ञात् सर्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम्।
पशून्तांश्चक्रे वायव्यानारण्यान्ग्राम्यांश्च ये।
(ऋ० १०/९०/८)

सर्व सामग्री के जवना विशाल यज्ञ में हवन भइल रहे ओही सर्वहुत यज्ञ के चूअत आज्य (चर्बी या दधि मीलल घत) ऊपर इकट्ठा भइल। उहे वायु में रहेवाला, ओ जंगली ओ ग्रामीण पशु के बनवलन।

(५५) तस्माद्यज्ञात् सर्वहुतः ऋचःसामानि जज्ञिरे।
छन्दांसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तमादजायत।
(ऋ० १०/९०/९)

ओही सर्वकुल पुरुष से समस्त ऋचा (ऋग्वेद) ओ सामगान (सामवेद) उत्पन्न भइल। अनेक छंद भी ओही से उत्पन भइल। स्वामी दयानन्द छंदांसि के अर्थ अथर्ववेद करेलन। ओही विराट् सर्वव्यापी आदि पुरुष से यजुः अर्थात् कर्मकाण्डात्मक मंत्र (माध्यदिन, काण्व, तैत्तिरीय, काठक, मैत्रायणी, कपिष्ठल-कठ आदि) भी उत्पन्न भइल।

(५६) तस्मादश्वा अजायन्त ये के चोभदादतः।
गावो हजज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता अजावयः।
(ऋ० १०/९०/१०)

एही सर्वहुत पुरुष से घोड़ा पैदा भइल ओ ऊ समस्त प्राणी उत्पन्न भइलन जिनका मुख में दुनो ओर, ऊपर नीचे, दांत बाटे। गाय भी ओही से उत्पन्न भइली। बकरीओ भेड़ भी ओही से उत्पन्न भइल अर्थात् गाय, बकरी ओ भेड़ के कदापि हत्या ना करे के चाहीं।

www.bhojpurisahityangan.com

एकरा हत्यारा के सर्वहुत पुरुष भीषण दण्ड दीहन तबे कर्मफल मिलल ई कहल जा सकेला।

(५७) यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्।
मुख किमस्य को बाहू का ऊरू पादा उच्येते ॥
(ऋ० १०/ ०/१५)

जब यज्ञ पुरुष के देवगण विभाजित कइलन तब केतना अंश बनावल लोग? उनकर मुंह का रहे, दुनो हाथ का रहे, उनकर जंघा ओ पैर का रहे?

(५८) ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्य कृतः।
ऊरू तदस्य यद्देश्यः पम्यां शूद्रो अजायत ॥
(ऋ० १०/९०/१२)

पुरुष के मुख भइल तत्वदर्शी लोग अर्थात् समस्त विचारक, लेखक, कवि, अध्यापक ओ बुद्धिजीवी लोग। जे लोग रक्षक, आरक्षी, सेना आदि के कर्मचारी रहे ऊ सब हाथ रहे। जे कृषि, व्यापार आदि करे ऊ वैश्यरूप ऊ जांघ भइल। जे सेवा वृत्ति से समाज के धारण करे ऊ शूद्र भइल। एह मंत्र में नारायण ऋषि कर्मानुसार समाज के विभाजन बतावत बाड़न। कुछ दुर्बुद्धि लोग एकर अर्थ करेला कि अंग विशेष से जाति गण उत्पन्न भइल।

(५९) चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत।
मुखादिन्द्रश्चाग्निश्च प्राणाद्वायुरजायत ॥
(ऋ० १०/९०/१३)

आदि सर्वहुत पुरुष का मुंह से चन्द्रमा उत्पन्न भइल ओ आँख से भास्वर पूषन्, एकर्षि सूर्य महाराज। उनका मुख से इन्द्र आउर अग्नि उत्पन्न भइल। उनका प्राण से वायु देवता उत्पन्न भइलन जिनकर पुत्र हनुमान जी ओ भीमसेन त्रेता ओ द्वापर में भइल लोग।

(६०) नाभ्या आसीदन्तरिक्षं शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ अकल्पयन् ॥
(ऋ० १०/९०/१४)

www.bhojpurisahityangan.com

सर्वहुत विराट् पुरुष का नाभि से अन्तरिक्ष उत्पन्न भइल। द्यौलोक उनका शिर से कल्पित भइल। पृथिवी, पैर से, ओ कान से दशो दिशागण। एह प्रकार पुरुष का यज्ञ कइला से समस्त लोक-लोकान्तर, द्वीप द्वीपान्तर, प्राणिसमूह, ज्ञान विज्ञान ओ सामाजिक व्यवस्था उत्पन्न भइल। अर्थात् समूचा सृष्टि पुरुष से आच्छादित बा, स्नेह भाव से करुणायुक्त होके व्यवहार करे के चाहीं।

(६१) सप्तास्यासन्परिधयस्त्रिसप्तसमिधः कृताः।
देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबध्नन् पुरुष पशुम्॥
(ऋ० १०/९०/१५)

उनका सात परिधि (यज्ञ परिधि अथवा छन्द) रहें। तीन गुणे सात अर्थात् सत्ताइस समिधा रहे। जब देवगण यज्ञ करे वास्ते पुरुष रूपी पशु के बंधले रहम।

(६२) यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥
(ऋ० १०/९०/१६)

देवगण यज्ञ से ही यज्ञ कइलन। प्राचीन काल के पुरातन धर्म इहे रहे। महिमा से पूर्ण लोग द्यौः लोक के प्राप्त कइलन, उहां जहाँ देवगण ओ साध्य लोग रहेला। पुरुष सूक्त परम प्रसिद्ध ह। आजकल भी पठनपाठन, शोधकार्य ओ यज्ञ में एकर उपयोग होला। परमोत्कृष्ट पुरातन तत्त्व के एकरा में उपासना के योग बतावल बा। कुछ पाश्चात्य वैदिक विद्वान् कहेलन कि एह सूक्त में प्राचीन काल में व्याप्त नरबलि के आंशिक उल्लेख बा। किन्तु नरबलि जइसन घृणित प्रथा के, भारत के ऋषि लोग, उल्लेख करे, ई बात हृदय पर चोट पहुँचावे वाला बा। समस्त जड़चेतन, गोचर, अगोचर, विश्व ब्रह्माण्ड, सूरज, चनरमा आदि विशाल यज्ञ पुरुष के अंशमात्र बाड़न एह से ब्रह्मा ओ प्रजापति आदि के भी पिता पुरातन पुरुष ही एकमात्र मानसिक पूजन का योग्य बाड़न, इह भाव एह सूक्त में विदित करावल बा। ऋग्वेदीय पाठ में ऊपर लिखल सोलहे मंत्र बा। मान्ध्यदिन शाखा में छः मन्त्र आउर बा जेकर विवेचन आगे होई। □□

www.bhojpurisahityangan.com

कृष्णानन्द कृष्ण : संघर्षी स्थितियन के कहानीकार/डा० चन्द्रेश्वर कर्ण

जब जीये के शर्त अतना कठिन हो जाय कि हर सांस बन्हकी लागे लागे त केहू कइसे जीओ। अइसन हालत में जीये के हर कोशिश मृत्यु के नियरा ले जाला आ संघर्ष करत आदमी असहाय लागे लागेला। ओकर असहायता आदमी मात्र के असहायता बन जाला आ ई असहाय आदमी अउर केहू ना, समाज के निचला इकाई के आदमी होला। असहायता के हर पल ओकरा के तुड़ेला ऊ भीतरे-भीतर छीजत रहेला। कृष्णानन्द कृष्ण के कहानी—असहायता के एही क्षण के कहानी बाड़ी स। इनकर कहानी सब अभिशप्त, आहत आ छोट लोगन के कहानी बाड़ी स। सवाल उठत बा कि अइसन का बड़ए कि कृष्णानन्द अपना कहानियन में अइसने लहू-लुहान लोगन के स्थान देलन। या अइसने लोग इनका कहानियन में स्थान पा जाला। एह से भिन्न स्थितियन के भी कहानी त लिखल जा सकत रहे। बाकिर नोकरी खोजत नवही, रोटी खातिर चोरी-चमारी करे खातिर अभिशप्त लोग, विरोध के बलिवेदी प सांस तुरत संघर्षी-नवही, अपना नोकरी से हाथ धोवत ईमानदार मजदूर, अपना इज्जत खातिर कुछुओ कर गुजरे वाली जीवट के लड़की, से कृष्णानन्द अधिका लगाव महसूस करेलन। ऊ एह चरित्रन के सिरजस ना, ओकनी के ओकरा जीवित परिवेश से तलाशे लन। एही जानलेवा स्थितियन से ऊ सम्बद्धता महसूस करेलन। ओकरा बिना एह तरह के कहानी पैदा ना हो सके।

कृष्णानन्द के कहानी जिनगी से सरोकार के कहानी बड़ए। मनोरंजन इनका कहानियन के ना त उद्देश्य बड़ए आ ना ई ओकरा खातिर वचनबद्ध बाड़न। इनकर वचनबद्धता त जिनगी के प्रति

www.bhojpurisahityangan.com

बा। क्रूर स्थितियन में अइँठत, दम तुरे खातिर बाध्य इनकर चरित्र हारतो-हारत जीये आ जीते के उर्जा से भर उठेलन। जीये आ जीते के ई शक्ति ऊ कहीं दोसरा जगह से ना अपना भीतरे से प्राप्त करेला। ओकनी के मारक स्थितिये ओकनी के आखिरी लड़ाई लड़ लेवे खातिर बाध्य करेला। इहे बाध्यता आज के सर्वहारा के शक्ति बड़ए। आज ऊ ओह हद ले पहुँच गइल बा जहाँ अपना अस्तित्व खातिर बिना लड़ले गुजारा नइखे। 'रावन अबहीं मरल नइखे' के मुनेसर अपना बहिन के इज्जत पर ठाकुर के गिद्ध नजर देख के सोंचता—"आखिर ई अत्याचार आ जुलम कबले सहल जाई। विरोध ना कइला से त ओकर मन अउर बहकत जाई। ओकरा खूनी आदत प रोक लगावल जरूरी बा। एकरा खातिर एक शिवरतन का सौ गो शिवरतन के कुरबानी कम बा।" ऊ एह बात से तनिको नइखे घबड़ात कि ऊ निहत्था बा। ओकरा सर्वहारा शक्ति प अटूट बिसवास बा। ऊ कहता—"भाई, हमनी निहत्था जरूर बानी, बाकिर गलत ना। सबसे बड़ बात त ई बा कि जब हमनी के सब हाथ एक साथे ठाकुर के खिलाफ में उठी त ठाकुर के तलवार के धार एह हाथन का आगा भोथर पड़ जाई। जरूरत बा एह हाथन के ताकत के पहचाने के। अउर त अउर ठाकुरो के सब शान-शौकत त एही हाथन के असरा करेला।" आ इहे आत्म संबोधि ओकनी के रावन से जूझे खातिर शक्ति देला।

आजुओ छोट अदिमी महाजनी क्रूरता के अभिशाप झेल रहल बा। कृष्णानन्द के 'पह फाटे का पहिले' कहानी में महाजनी क्रूरता बेनकाबे नइखे होत मोह से उपजल करुणा आ शोषण के परतो एक प एक उघरल चल जाता। झगरुआ के छलछलाइल आँख, बाबूजी के हृदयहीन महाजनी क्रूरता एके साथे करुणा आ आक्रोश दूनो पैदा करता। कहानी के महाजन बुटाई सिंह कहानी के नायक के पिता के मरला के आठे दिन के भीतर बलदेव पंडित के साथे हैंडनोट नया करवावे खातिर आ जाता। ई महाजनी क्रूरता आ हृदयहीनता के नगा उदाहरण बा। जेकरा गुंजलक में जकड़ल अदिमी मुक्ति के

www.bhojpurisahityangan.com

आशा नइखे कर पावत। महाजनी सभ्यता में सौजन्य, सौन्दर्य-बोध आ सामान्य शिष्टाचारो के निषेध होला।

नवहा वर्ग के बेरोजगारी, ओकनी के लाचारी, असहायता आ आज के त्रासद स्थितियन के कृष्णानन्द के कहानियन में बयान होला। 'कायर' कहानी के नायक बेरोजगारी से ऊब के आत्महत्या प उतारू हो जाता। ऊ 'गोल्ड मेडल' के साथे बी-एस० सी इंजिनीयरिंग पास कइले बा, बाकिर घूस खातिर पइसा के अभाव में, बड़ पैरवी ना भइला के कारण ओकरा नोकरी नइखे मिलत, आ वहीं जात के आधार प छाँट दिहल जात बा। आ ओकरा नोकरी के आशा में ओकर मतारी दम तुड़ दे तारी, फूल अइसन कोमल बेटा भूख से मुरझा जाता। एह त्रासद स्थिति से आज के पूरा पीढ़ी गुजर रहल बा। इहे ना आज के निचिला मध्यवर्ग के नवहा अपना बेजान औकात के घसीटे में टूट-बिखर रहल बा। 'राहत का तलास में' कहानी के हरेक पात्र एगो ठंढा मौत जी रहल बा। एह कहानी के नायक सऊँस कहानी के सरवन कुमार त नइखे बाकिर ऊ ओकरा से कम दरदो नइख भोगत। माई गेठरी बनल खटिया प पड़ल बाड़ी आ बाबू जी एक सौ चार डिग्री बोखार में। माई के सेनुर आ बाबूजी के हर साँस के क्रम देवे में ओकर साँस टूटत जा रहल बा, ओकरा मेहरारू के सेनुर धूमिल होत जा रहल बा। एगो छोट ईमानदार सरकारी सेवक खातिर ई केतना कठिन बा कि ऊ हर चेहरा के खुशी दे सको आ हर साँस के एगो क्रम। रूखल-सूखल रोटी आ मेहरारू के पनिआइल उदास आँख, ऊपर से मकान मालिक के मकान छोड़े के धमकी जीये के शर्त्त के कतना कठोर बना देता। अइसना में ऊ शराब में राहत के तलास करता त तर्कहीनता कहाँ बड़ुए! ओइसे ई आरोप ओकरा ऊपर लगावत जा सके ला। ई निचला तबका के लोगन के पीड़ा-कथा बड़ुए।

अइसने एगो कहानी बड़ुए 'एह देस में' जहाँ पढ़ल-लिखल नवही काम के अभाव में जरायमपेशा करे खातिर बाध्य हो जाता। बेरोज-

www.bhojpurisahityangan.com

गारी के मार ओकर आदमियत छीन लेता आ ऊ ई सोंचे खातिर मजबूर हो जाता कि आजादी के सत्ताइस बरिस बीतला के बादो ओकरा का मिलल—गरीबी, मँहगी, आ भ्रष्टाचार। ओकर लइका दूध खातिर तरसत बा आ अमीरन के कुत्ता दूध पीयत बा। ओकरा मन में सवाल उठता—आखिर अइसन काहे होता? इहे सवाल आज सभे के सवाल बन गइल बा। एकरा बादो ऊ जानता कि आज के सब संबन्धन के आधार अर्थ बड़ुए। ओकरा बिना सब सम्बन्ध अर्थ हीन बा।

कृष्णानन्द के कहानियन में गाँव के दम घोंटू वातावरण, सामंती मन, व्यवस्था आ आदमी विरोधी खड़जंत्र के पूरा लेखा-जोखा मिलेला। एक स्थितियन के ऊ बड़ा बेबाकी से कथा के जामा पहिरा-वेलन! 'कीर्तन' आ 'रावन अबही मरल नइखे' जइसन कहानियन में गाँव के परिवेश के यथार्थ अपना नंगापन के साथे उभर के सामने आइल बा। भारत के गाँव आजो सामंती क्रूरता का बीचे साँस ले रहल बा। लाठी आ पइसा के सामंती तंत्र गाँव के लोगन पर लाग बा। ओह लोग खातिर प्रजातंत्र मुहावरा भर रह गइल बा। अगर अइसन ना होइत त 'कीर्तन' कहानी के अभय सिंह गैरमजरूआ जमीन प मंदिर आ कुआँ लाठी के जोर प ना बनवा लेतन। विरोध के हर आवाज के ऊ गला घोंट देता। सुरुजा सामंती व्यवस्था के अलम-बरदार अभय सिंह के गलत इरादा के बिरोध करता। ऊ जानता कि बाबू साहेब आ पंडित जी मिल के सब जमीन हड़प लेल चाहत बाड़न। ऊ एह बात के विरोध करेके चाहता। ऊ अपना वर्ग के लोगन में बिसवास पैदा कइल चाहत बा आ कहता—'एही जा त बस दू गो लोहा अइसन हाथन के भरोसा बा। आज एही हाथन के तनी आउर कड़ा क के राखे के जरूरत बा।' सामूहिक विरोध होत बा, बाकिर दोसरा सुबह सुरुजा के छत बिछत देह नदी किनारे पड़ल मिलत बा। अभय सिंह के एह में पंडित सुखराम तिवारी के सह-योग मिलता। शोषण में पंडित आ बाबू साहेब के मिली भगत कबनो नया नइखे। असलियत त ई बा कि ई एक दोसरा प आश्रित

www.bhojpurisahityangan.com

व्यवस्था के अंग बड़ुए। आ ई सब होत बड़ुए धरम के नाँव पर। 'रावन अबहीं मरल नइखे' एही निर्लज्ज सामंती व्यवस्था के कहानी ह। ठाकुर के नजर मुनेसर के बहिन परबतिया प गड़ल बा। परबतिया के ले के ठाकुर आ मुनेसर में थोड़की सा नोंक-झोंक ले हो जाता। ऊ परबतियन खातिर, फेरू अपना खातिर चिंतित हो उठता। काहे कि -"ठाकुर के खूनी पंजन के कहानी गाँव के हर गली, हर देवाल कहेला। एक बेरा ऊ जेकरा के नजर प चढ़ा लेला ओकरा जिनिगी में दोसर भोर ना होला। पिछिले साल के बात ह, बसंती के चलते शिवरतन के ओकरा संगे कुछ चख-चुख भइल रहे आ दू तीन दिन के बाद एही कुआँ में ओकर लाश उतरात मिलल रह।" दूनो भाई-बहिन ठाकुर के सामंती हवस के विरोध कर तारेस आ आगे कर के हिम्मतो रख तारेस। ऊ दूनो बदलल समय के आहट देत बाड़ेस। ओकनी के बिसवास नयका सर्वहारा के बिसवास बा। सर्वहारा के एही बिसवास के कहानी बाटे 'इन्तजारी'। 'इन्तजारी' कहानी के नगीना राम सामती व्यवस्था के अभिशप्त पात्र त बढ़लहीं बा साथे-साथे ओह अभिशाप से विरोध आ बिद्रोह के चिनगारियो फूटत बड़ुए। सामंती अर्थतंत्र बेविसवासी होला। स्वार्थ ओकर मूलचरित्र होला। अच्छा-बुरा सब ओकर भक्ष्य होला। तबहीं नू बाबू मंगल सिंह अपना विश्वस्त नोकर नगीना राम के एकलउती बेटी फुलमनिया के इज्जत उतारे में तनिको नइखन हिचिकत। जबना नगीना राम के बउसाव प मंगल सिंह के सउँसे रख रखाव टिकल रहे ओकरे बेटी उनका हवश के शिकार बन जातिया। नगीना उनका इहाँ ओह समय से बा जब ओकर उमिर बाइस-तेइस बरिस के होई। ओकरा अंग-अंग से जवानी फूटत रहे। लाम-लहकार छव फुटा जवान। चाकर छाती, अइंठल मछरी वाला बाँह आ सबसे उपर ताँवा अइसन दमकत चेहरा।..... सब से बड़ गुन रहे ओकरा में—ईमानदारी। ओकर इहे देह-शक्ति आ ईमानदारी के कारण मंगल सिंह के घरे लछिमी जइसे हाथ-गोड़ तूर के बइठ गइल रही। ऊ मुखिया बनलन। धन आ अधिकार के घमंड मंगल सिंह के नीचे गिरावे के शुरू क देले रहे। नगीना के बार-

www.bhojpurisahityangan.com

बार चेतवला के बादो उनका में सुधार ना भइल। "उनुका रहन-सहन आ चाल-ढाल में अब जमींदाराना टाट आवे लागल रहे। हाकिम लोग के अइला प मुरुगा कटे। खस्सी पिटाय आ ओकरा साथे-साथे अंगरेजी शराब के दौर रात-रात भर चले। कबो-कबो औरतनो के इस्तेमाल होखे।" ई खाली मंगल सिंह के चरित्र-पतन ना होके गँवई नेतृत्व के वर्ग चरित्रों के स्पष्ट करता। इहें सामंती चरित्र एक दिन नगीना के बेटी फुलमतिया का संगे बलात्कार करता आ ओकरा के मरे खातिर बाध्य करता। अइसे त मंगल सिंह के मउअत अनजान लोगन के द्वारा होता बाकिर जेल से छूटला प नगीना के दाब खरोदल आ ई कहल—"आज के रात ओह सरऊ खातिर अंतिम रात होई। सारे के कुट्टी-कुट्टी काट के रख देब।"—शोषित-पीड़ित-प्रताड़ित जन के मन में बदला खातिर फूटत लावा के इजहार बा। समाजवाद के नाँव पर कइल जात छल के पर्दाफास करत बड़ुए। ई कहानी गँवई व्यक्ति, व्यवहार आ समस्यन के पंचांग बड़ुए। ई कहानीकार के अच्छा कहानी में शुमार होई।

एह कहानियन से अलग इनकर कहानी 'षड़यंत्र' बड़ुए। जवना में मजदूरन के त्रासदी उजागर भइल बा। ईमानदार, कर्त्तव्यनिष्ठ आ श्रमनिष्ठा से भरल मजदूरन के खिलाफ व्यवस्था के अमानवीय आ चालाकी से भरल षड़यंत्र होला आ ऊ सब आपन रोजी-रोटी गँवावे खातिर बाध्य होलन। पूंजीपतियन आ ओकनी के गुरगन के मक्कारी एह कहानी में बेनकाब भइल बा। मजदूरन के साथे कइल गइल छल आ सीधा-सादा मजदूरन के बरखास्तगी सुगबुगाहट पैदा करता।

एही तरह फैक्टरी मजदूरन के कहानी बा 'सुदिन का इन्तजारी में।' एह में मजदूर नेतन पर बड़ा तीखा प्रतिक्रिया व्यक्त भइल बा। एगो मजदूर सोंचता—"साले नेता के भासन होई। इहाँ खटत-खटत रगे-रगे ठेला पड़ गइल, डाँड़ टेढ़ हो गइल.....इहो साला खूब हरियरी देखावेलन स आ खूब दुहिहें स—गाय अइसन।" इहे कारण

www.bhojpurisahityangan.com

बा कि ओकरा एह नेता टाइप क लोगन से विरना होत जा रहल बा। काहे कि ऊ जानता कि ऊ सब मजदूरन से चन्दा उगाहेवाला आ मालिक के पइसा प पलेवाला गुरगा बाड़न स।

'गेट का बाहर' कहानी कृष्णानन्द के मानवीय सरोकार के कहानी बड़ुए। एह में एक साथे सामंती मन मिजाज आ बाल मनोविज्ञान के सहमेल बा। एगो छोट लइका अगर घर में कवनो लइका के पढ़े जात देखत होखे त स्वाभाविक रूप से ओकरो मन में पढ़े आ इस्कूल जाये के इच्छा हो सकेला। सबके राखी बन्हवावत देख के ओह लइका के मन में राखी बन्हवावे के सहजे इच्छा जागृत हो जाता। इ दीगर बात बा कि ओह लइका के मालिक के सामंती मन ओकर पढ़ाई आ राखी बन्हवावे के इच्छा के स्वीकार नइखे कर पावत। ई मानवीय संभावना के कहानी बड़ुए।

कृष्णानन्द के कहानी सामाजिक विरूपता, शोषण-दोहन, अत्याचार आदि समस्यन के खुलासा करेला। बावजूद एकरा एह कहानियन में कुछ अइसन खोट बनल रह गइल बा जवना से अछूता रह के ई इयाद रखे लायक कहानी बन सकत रही स। एह कहानियन में अइसनो स्थल बा जहाँ या त अतिरिक्त कथन बा, या ओकर कवनो तार्किक परिणति नइखे? आ एके मुहावरा आ बिंब एके कहानी में भा दोसरो कहानी में बार-बार आइल बा जे कहानीकार के अक्षमता के इजहार कर रहल बा।

कृष्णानन्द के कहानी रचाव के दृष्टि से एगो पहचान बनावे के अकुलहट झेल रहल बाड़ी स। एकर पहिल पहचान होत बा भाषा के स्तर प। जहाँ इनकर भाषा बिम्बधर्मी बा उहाँ आक्रोश के भाषा पूरा प्रभाव के साथे उभर के आवत बा। इनकर बिम्ब प्रयोग सर्वथा अछूता बा—'मुंह अरुआइल पीठा अइसन लटक गइल' (एह देस में), 'बीच में चुप्पी कूहा अइसन पसर गइल रहे,' 'बाद में त इ लोग मुरुचाइल लोहा अइसन भोथर हो जाई' (सुदिन का इन्तजारी मे),

www.bhojpurisahityangan.com

'अन्हरिया के करिया महाड़' (इन्तजारी) 'रोटी के कवर गरदन में रेंगनी के कांट अइसन गड़त बा' [राहत का तलास में] 'मन में तरह-तरह के बिचार समुन्दर के लहर अइसन उठत आ गिरत रहे' (पहफाटे का पहिले) आदि। 'अनचिन्हार चुप्पी' अइसन विशेषण विपर्ययनों के प्रयोग कहीं-कहीं मिलत बा।

इनका कहानियन में आक्रोश के भाषा अपना पूरा तेवर का साथे उपस्थित बा। 'सुदिन का इतजारी में' एगो मजदूर के भाषा—'तं त साला लइकाइयें के मुँहदुब्बर हवस। तबे नूँ तोहनी का अतना कम मजूरी प दिन भर हाड़ ठेठावत बाड़ सन। एगो हमनी के इहाँ देखु, मालिक के नाकन पानी पिआ के छोड़ देले बानी जा। अब हमनी के बोनसो जादे मिलत बा।' एह में खीझ आ गुस्सा प्रत्यक्ष बा। मजदूरन के भाषा में 'डायरेक्टनेस' होला। ऊ बिना कवनो लाग-लपेट के बोलेलन स—"तें साला खाली फुटुर-फुटुर करेलस। लाज लागता त मँगा के पी ले आ फूट इहाँ से।' मजदूरन से थोरका अलग भाषा होला सामंती मन-मिजाज के आदमी के। 'गेट का बाहर' कहानी के रमन अपना नोकर महेसवा के राखी बन्हवावे के इच्छा प्रगट कइला प कड़कन आवाज में कहत बाड़न—"जब देख तब ससुरा फालतू बात बोलत रहेला। कइस दो कहल बा—'बाप के नाँव साग-पात बेटा के नाँव परोरा। एक बेरा ससुर के पढ़े के ताव जागल त एक बेरा राखी बन्हवावे के। जो आपन काम कर। जवन बात पूछल जाए ओकरे जबाब दे।" एही तरह से 'राहत का तलास में' कहानी के ई लाइन सब भाषा के अइसन बानगी पेश करत बा जे हमनी के एक साथे लँगटे क देता, आ करुणा, खीझ आ आक्रोश से भर देत बा।—".....आ हम एगो अनचीन्ह भय से केरा के पतई अइसन काँप उठत बानी। पाकिट टो के देखत बानी गिनल-गूँथल बीस रोपेया आ महीना लागे में दस दिन देरी। हमरा आँख का आगा घरवाली के सूखल, उदास चेहरा, रूगी-रूगी फाटल साड़ी .....छन भर में घूम जात बा। ई डाक्टरो त अइसने बा। साला एकदम कसाई ह।"

www.bhojpurisahityangan.com

इनका कहानियन में प्रतीकन के अर्थ गर्भी प्रयोगो भइल बा। 'एह देस में' कहानी में नायक के कमरा में सामने के देवाल प टाँगल हिन्दुस्तान के नक्सा बहुत पुरान नाहियों भइला के बावजूद कए जगह से उड़ गइल बा। उड़े के के कहो, कहीं-कहीं फाटियो गइल बा। हिन्दुस्तान के ई नक्सा आज के हिन्दुस्तान के प्रतीक बड़ए। 'पह फाटे का पहिले' में 'जरत-बुझत अंगार' कहानी के नरेटर के अपना जीवन के प्रतीक बा। तबहीं ओकरा लागता का ई जिनिगियो एक दिन आग अइसन ठंढा हो जाई। तबहीं ओकर ध्यान फद्-फद् के आवाज के ओर जाता। ऊ ढिबरी के ओर देखता। एगो फतिंगा के बिछउँतिया पकड़ले रहे। फतिंगा भागे के कोशिश कइला के बावजूदो भाग नइखे पावत। ई सब प्रतीक अदिमी के नश्वरता के, काल के बड़ए। तबहीं 'नरेटर' देखत बा कि बिछउतिया फतिंगा के खा गइल बिआ आ ढिबरी फकफका के बुता गइल बा। एकरा साथे ओकर बाबू जी के साँसो जा चुकल बा। कहानीकार एह प्रतीकन के प्रयोग जबना तरह से कइले बा ई ओकरा शक्ति के परिचायक बा। 'कायर' कहानी के नायक 'एगो सोनहुला घाम के टुकड़ा के किलकारी मारत देखता। ई सोनहुला किलकारी मारत घाम के टुकड़ा आशामय भविष्य के प्रतीक बड़ए।

कृष्णानन्द के कहानी एह खातिर पढ़ल आ इयाद ना कइल जाई कि ई बचनबद्धता के कहानी बाड़ी स, बलुक एह खातिर पढ़ल आ इयाद कइल जाई कि ई अपना समय-सत्य, व्यक्ति, समाज आ त्रासद स्थितियन से सरोकार के कहानी बड़ए। ई एह खातिर पढ़ल जाई कि इ आज के आदमी के बेचैनी के कहानी बा आ ऊ बिना कवनो लाग-लपेट के सबके सोझा बा।

□

www.bhojpurisahityangan.com

बरतस/डा० विवेकी राय

विकास वाला लोग

सभापती जी के गाँव वाला लोग लाल बुझक्कड़ कहेलन। तवन झूठ नाहीं। एक दिन हमहूं देखलीं कि कइसन बुझनइक बाड़न। बाति ई भइल कि सभापती जी अपना ट्यूबवेल पर पानी चलावत रहलन तबले उनकर लइका चोंहपल। बोलल —

"पिता जी, आप घरे ना रहलीं हँ ओही घरी जीप गाड़ी पर बइठल चारि-पाँचि गो सकइल भलमनई आइल रहलनि हँ। ऊ लोग रहि-रहि के पूछत रहलन हवन कि सभापती जी कहाँ बाड़न ?"

"अरे कवनो नेता-सेता रहल होइहें स। चलि गइलन स न ?" सभापती जी पूछलनि।

"चलि कहाँ गइलन स ? खूब डँटि के चाह-पानी का बाद भोजन कइ के लोग गइलन हँ।"

"आरे तब ऊ विकास वाला रहल होइहन स।" सभापती जी कहलन।

फर्स्ट वाला मामिला

सांझि भइला छुट्टी भइली त मुन्ना अगतहीं घरे चोंहपि के बाबा से कहे लगलन, बाबा, बाबा आजु त मजा आ गइल हँ। स्कूल में दौड़ भइल ह आ हमार चुन्ना भइया फर्स्ट आ गइलन ह। ई बाति घरे अउरियो लोग सुनल आ चुन्ना का घरे चोंहपते चाबासी दियाये लागलि। बाह बचवा, खूब नाँव कइले! बाकी गजब हो गइल कि कुल्हि चाबासी आ बड़वरगी का चलते चुन्ना महाराज रोवे

[शेष पृष्ठ ३१ पर]

www.bhojpurisahityangan.com

पुण्यश्लोक सिपाही सिंह श्रीमन्त

भोजपुरी के असाधारण व्यक्तित्व सिपाही सिंह श्रीमन्त जी अब एह दुनियां में नइखीं। १५ जनवरी १९८० के साढ़े एगारह बजे दिन में उहाँ के देहान्त हो गइल। अइसे त उहाँ का दम्मा के मरीज रहीं, आ पिछला दू साल से एह रोग से उहाँ का तबाही बहुत रहत रहीं, बाकिर उहाँ के देहान्त एह रोग से ना, हृदय के गति रुक गइला से हो गइल। अपना सुपुत्र भारतेश्वर से बतियावत आ उनका से अखबार पढ़वा के सुनत खानी उहाँ के प्राण-पखेरू उड़ गइल।

श्रीमन्त जी भोजपुरी के एगो पाया रहलीं हं। लेखन से ले के संगठन तकले, भाषा से ले के साहित्य तकले, रचनात्मक लेखन से ले के सम्पादन तक ले, कविता-कहानी से ले के निबन्ध तकले, समीक्षा से ले के शोध तक ले, मौलिक लेखन से ले के अनुवाद तक ले, लिखला से ले क लिखवला तकले, गोष्ठी-संगोष्ठी से ले के प्रकाशन तकले, गांवा-गांइँ भोजपुरी के अलख जगवला से ले के अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन तकले, कवनो अइसन क्षेत्र नइखे जवन उहाँ के अवदान से समृद्ध ना भइल होखे। देह से ले के पइसा तकले उहाँ के जिनगी भोजपुरी खातिर समर्पित रहे, आ सही माने में उहां का भोजपुरी के सजग सिपाही रहीं। उहाँ का ना रहला पर बुझाता जइसे भोजपुरी के सक्रियता थथम गइल होखे।

भोजपुरी संस्थान से आ "उरेह" से उहाँ का अभिन्न रूप से जुड़ल रहीं। उहाँ का 'उरेह' के संचालक-मण्डल के सक्रिय सदस्य रहीं, आ एकरा स्तर के बहुत आग्रही रहीं। एह अंक के अधिकांश छपा गइला पर उहाँ के निधन के खबर मिलल। एही अंक में उहाँ के श्रद्धांजलि देत करेजा खोंखोरे लागत बा।

www.bhojpurisahityangan.com

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के महामन्त्री त उहाँ का पिछला दू सत्र से रहीं। बाकिर एह संस्था के जन्म से उहाँ का एकर अभिन्न अंग रहीं, आ एकरा विकास में उहां के बहुत योगदान रहल बा। एह सम्मेलन के पाँचवां अधिवेशन १४, १५, १६ मार्च १९८० के मोतिहारी में होखे वाला बा। एह अधिवेशन में भोजपुरी के बढ़न्ती खातिर कुछ ठोस कार्यक्रम पेश करे के मनसा श्रीमन्त जी के रहे। अफसोस कि अइसन हो ना सकल। श्रीमन्त जी एह दुनिया से कूच कर दिहलीं। अधिवेशन त होई, बाकिर ओकर पुरोधा श्रीमन्त जी के अभाव डेगे-डेग बुझाइ। संतोष के बात बा कि अधिवेशन-स्थल के नामकरण श्रीमन्त जी का स्मृति में 'श्रीमन्त नगर' राखे के निर्णय भइल बा। श्रीमन्त जी का स्मृति में सम्मेलन का कुछ आउर ठोस काम करे के चाहीं। श्रीमन्त जी का नाम पर एगो ग्रंथ पुरस्कार के स्थायी व्यवस्था त होखहीं के चाहीं, उहाँ के स्मृति में सम्मेलन का ओर से एगो स्मृति ग्रंथ भी निकले के चाहीं। एकरा अलावे, उहाँ के कृतियन के प्रकाशन कइल भी एगो जबर्दस्त दायित्व भोजपुरी के कार्यकर्त्ता लोग पर बा। एह सब काम में ओह सब संस्थन के योगदान मिल सकत बा, जवना से श्रीमन्त जी सम्बद्ध रहल रहल बानीं। सम्मेलन का ओर से अइसन कुछ काम होखहीं के चाहीं। उहे श्रीमन्त जी का प्रति सही श्रद्धांजलि होई।

—पाण्डेय कपिल

[पृष्ठ २९ का शेषांश]

लगलन। जइसे-जइसे उनकरा के फर्स्ट आइल कहल जाव ओइसे-ओइसे उनकर रोवल बढ़ल जाव। ई का मामिला हवे? दूनो भाई के आमने-सामने कइल गइल। बाबा कहलन, का हो मुन्ना, कहीं मजाक त नइख कइले? अब चुन्नो बिगड़लनि, हम कहां फर्स्ट आइल बानी? हमके काहे दिगावत बाड़ जा? मुन्ना से जबाब तलब भइल त ऊ बोललनि—हम साच कहत बानी, भइया फर्स्ट आइल बाड़न एतना जरूर बा कि पाछा का ओरि से गिनला पर ई फर्स्ट रहलन हवन। □

www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरी संस्थान

२, ईस्ट गार्डिनर रोड, पटना-१

के अनमोल प्रकाशन

१—भोर हो गइल/कविता-संग्रह/पाण्डेय कपिल/५.००
२—पुरइन/कविता-संग्रह/शारदानन्द प्रसाद/२.००
३—जवानी के जगाइले/कविता-संग्रह/सिपाही सिंह श्रीमन्त/४.५०
४—ई हरनाकुस मन/कविता-संग्रह/पाण्डेय सुरेन्द्र/५.००
५—एह देस में/कहानी-संग्रह/कृष्णानन्द कृष्ण/३.५०
६—भोजपुरी कहानी विकास आ परम्परा/आलोचना/कृष्णानन्द कृष्ण/५.००
७—मीत मिलन/गीत रूपक/रामवचन सिंह यादव 'अंजोर'/३.२५
८—हम कुन्ती ना हईं/कहानी-संग्रह/पी. चन्द्रविनोद/५.००
९—फुलसुंघी/उपन्यास/पाण्डेय कपिल/७.००
१०—रेखा पर रेखा/रेखाचित्र/डॉ० लक्ष्मीशंकर त्रिवेदी/५.००
११—कलमिया नाहीं बस में/व्यक्तिगत निबंध/सत्यवादी छपरहिया/५.००
१२—मन के मोल/ललित निबन्ध/विन्ध्याचल प्रसाद श्रीवास्तव/४.००
१३—परशुराम/पौराणिक उपन्यास/अरुण मोहन भारवि/४.००
१४—माटी के दीया/कविता-संग्रह/अनिल ओझा 'नीरद'/५.००
१५—सनेहया/कविता-संग्रह/रघुनाथ चौबे/३.००
१६—दरबा/कहानी-संग्रह/वीरेन्द्र नारायण पाण्डेय/४.००
१७—सतवन्ती/कहानी-संग्रह/रामनाथ पाण्डेय/५.००
१८—प्रतनिधि कहानी भोजपुरी के/कहानी संकलन/
सं० सिपाही सिंह श्रीमन्त आ कृष्णानन्द कृष्ण/१२.००
१९—बाकिर/कविता-संग्रह/शारदानन्द प्रसाद/३.५०
२०—भइंसि के दूध/कहानी-संग्रह/डॉ० मुक्तेश्वर तिवारी 'बेसुध'
(चतुरी चाचा)/११.००
२१—बतकूचन/व्यक्तिगत निबन्ध/महेश्वराचार्य/२.५०
२२—सीता स्वयंवर/खण्ड काव्य/रामवृक्ष राय 'विधुर'/२.००
२३—एगो राजा रहले/लोककथा-संग्रह/रामदुलारी/५.००
२४—त्रिपुटी/समीक्षा/महेश्वराचार्य/३.००
२५—घर जोड़ा गांव/उपन्यास/पाण्डेय जगन्नाथप्रसाद सिंह/७.००